क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

4 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

''क्रियायोग ध्यान से अमरता की अनुभूति होने पर दैहिक, दैविक, भौतिक कष्टों का समापन''

4 फरवरी 2013 इलाहाबाद । ''पृथ्वी मृत्यु लोक नहीं बल्कि अमर लोक है । ब्रह्माण्ड की कोई भी रचना मृत्यु को नहीं प्राप्त होती है । पानी की एक बूँद, प्रकाश की किरण, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा दृश्य और अदृश्य जगत किसी भी रचना का विनाश नहीं होता है । समस्त रचनाओं का स्वरूप दृश्य से अदृश्य और अदृश्य से दृश्य में रूपान्तरित होता रहता है। मृत्यु की अनुभूति ही माया है, अविद्या है, अज्ञान है । अमरता की अनुभूति ही सत्य की अनुभूति है । क्रियायोग साधना से अमरता की अनुभूति होने पर दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का समापन हो जाता है।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने मोरी मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में स्पष्ट रूप से कहा है कि हे अजुन ! हम, तुम तथा समस्त कौरव, पाण्डव आदि सभी पहले भी थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे । ब्रह्माण्ड की प्रत्येक रचनाएँ अमर व सनातन तत्व हैं । स्वामी जी ने आगे कहा कि अपने सनातन अस्तित्व का ज्ञान प्राप्त करना ही योगेश्वर श्रीकृष्ण के मार्ग का अनुसरण है । ऐसा करने पर समस्त कर्मबन्धन जो ईश्वरानुभूति के मार्ग में बाधक हैं, सामाप्त हो जाते हैं जिससे मानव का जीवन कर्मबन्धनों से नहीं बल्कि सीधा आत्मशक्ति से निर्देशित

क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा
जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे ।

होता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग ध्यान कराते हुए आगे स्पष्ट किया कि पैर की अँगुली से सिर तक स्वरूप में प्रकट होने वाले समस्त परिवर्तन जिन्हें हम कडापन–ढीलापन, दर्द–आराम, हल्कापन–भारीपन, सुस्ती, थकावट आदि के रूप में अनुभव करते हैं, सुख दुःख नहीं बल्कि अमरता की अनुभूति है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा स्वरूप में मन को केन्द्रित करके प्रकट होने वाले समस्त परिवर्तनों को अमर तत्व, ज्ञान तत्व, शान्ति तत्व, जीवन तत्व, परमात्म तत्व के रूप में स्वीकार करने का अभ्यास ही अमृत पान करने की क्रिया है जिससे बीमारी, तनाव, चिन्ता, मृत्युभय, अज्ञानता का समापन होने लगता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से अन्तर्मुखी यात्रा का प्रारम्भ होती है जिसमें स्वरूप में अतिरिक्त पृथ्वी तत्व का रूपान्तरण जल तत्व में, जल तत्व का रूपान्तरण अग्नि तत्व में, अग्नि तत्व का रूपान्तरण वायु तत्व में तथा वायु तत्व का रूपान्तरण आकाश तत्व में होता है । तत्पश्चात् आकाश तत्व का रूपान्तरण तन्मात्राओ की शक्ति में, तन्मात्राओं का रूपान्तरण इन्द्रियों की शक्ति में, इन्द्रियों का रूपान्तरण मन में, मन का रूपान्तरण बुद्धि तत्व में, बुद्धि का रूपान्तरण अहंकार तत्व में और अहंकार का रूपान्तरण चित्त में होता है । इसी को अन्तर्यात्रा और स्वर्गारोहण कहा गया है । यही आत्मोत्थान की दिव्य यात्रा है जिसमें जीवभाव का आत्मभाव में विलय होता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान आहार विहार के वास्तविक स्वरूप पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए आये हुए समस्त साधकों, तीर्थयात्रियों, कल्पवासियों को क्रियायोग का विधिवत् अभ्यास कराया । मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6 से 7 बजे तक, श्री श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 5 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता